भारत की विदेश नीति में आसियान : वर्तमान एवं भविष्य

आलोक यादव
शोध छात्र, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद

Received: June 23 , 2018 Accepted: August 07, 2018

ABSTRACT *शीत युद्ध के अन्त ने एक तरफ जहाँ विश्व को द्विध्रुवीय से एक ध्रुवीय, फिर बहुध्रुवीय व्यवस्था में परिवर्तन किया वहीं भारत को भी अपने हितों के पूर्ति के लिए वैश्वीकरण के युग में रूस के अतिरिक्त अन्य विकल्पों पर विचार करने पर विवश किया जिसकी परिणति पूर्व की ओर देखो नीति (लुक इस्ट नीति)' के रूप में हुई। यह लेख भारत की आसियान के प्रति विदेश नीति की 'लुक इस्ट से एक्ट इस्ट' नीति के समीक्षा के सन्दर्भ में है।*

Keywords: *आसियान, हिन्द महासागर, सामुद्रिक नीति, विदेश नीति, वैश्वीकरण, सैन्य–सहयोग, रणनीतिक भागीदारी*

परिचय–

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में शीतुयद्ध के उपरान्त विभिन्न प्रकार की व्यवस्था परिवर्तन का हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध पुनः परिभाषित हुए, राजनीतिक–सुरक्षा व आर्थिक व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन आया। एकध्रुवीय व्यवस्था होने के उपरान्त भी नई शक्तियों (उदाहरण चीन) का उदय हुआ, नये (Alliances) गठबन्धन बने पुराने समूहों या गुटों में बदलाव हुए। इन परिस्थितियों का प्रभाव भारत की विदेश नीति पर भी पड़ा। विभिन्न चुनौतियों को दृष्टिगत रखते हुए भारत ने अपनी नीतियों में व्यापक परिवर्तन किए। इन्हों परिस्थितियों में भारत–आसियान सम्बन्धों की बुनियाद पड़ी।

भारत की विदेश नीति का इतिहास दक्षिण पूर्व एशियाई देशों के साथ मधुर रिश्तों, व्यापार, सांस्कृतिक जुड़ाव के अनगिनत तथ्यों से परिपूर्ण है। इन देशों में बौद्ध धर्म भारत से ही प्रसारित होकर पहुँचा। इस क्षेत्र में भारत की 'मृदु शक्ति' की छवि न विपरीत परिस्थिति में भी सम्बन्धों को आगे बढ़ाने में सहायता प्रदान की है। आसियान भारत के साथ सांस्कृतिक रूप के अलावा भौतिक रूप से भी जुड़ा है। म्यांमार भारत के साथ 1633 किमी0 की सीमा साझा करता है, तो इण्डोनेशिया अण्डमान द्वीप समूह के जलक्षेत्र से सीमा बनाता है।

आसियान एक सफल क्षेत्रीय सहयोग संगठन के रूप में उभरा है। इन देशों के साथ भारत का व्यक्तिगत सम्बन्ध काफी समय से बहुआयामी व महत्वपूर्ण रहा है। 'लुक ईस्ट' नीति के अन्तर्गत भारत आसियान के साथ भौतिक जुड़ाव को स्थापित करने के लिए अवसंरचनात्मक विकास पर बल दे रहा है। जिसका एक प्रमुख उदाहरण भारत–म्यांमार–थाइलैण्ड द्विपीक्षयी राजमार्ग है। आसियान के साथ व्यापार को बढ़ावा देने के लिए सड़क व रेलमार्ग द्वारा सम्पर्क स्थापित करना आवश्यक है। इस परियोजना को कम्बोडिया, लावोस व वियतनाम तक विस्तारित करने की योजना है।

जहाँ शीतयुद्ध के दौरान अमेरिका दक्षिण पूर्व एशिया क्षेत्र में साम्यवादियों के प्रभाव के रोकने के उद्देश्य से कई नौसैनिक अड्डे (जैसे–सिंगापुर) बनाया था। वहीं शीतयुद्ध के बाद इस क्षेत्र में चीन का प्रभाव तेजी से बढ़ा है। दोनों देशों की प्रतिद्वन्दिता का प्रभाव भारत व आसियान के देशों की सुरक्षा पर खड़ा है। एशिया प्रशांत क्षेत्र में चीन का विस्तारवादी रवैया अमेरिका के 70 वर्ष के नौसेनिक वर्चस्व को चुनौती दे रहा है। 2011 में इस खतरे को ध्यान में रखते हुए अमेरिका की तत्कालीन विदेश मंत्री हिलेरी क्विंटन न भारत से 'लुक ईस्ट के बजाय एक्ट ईस्ट पर ध्यान देने का आग्रह किया था।

आज के समय में भारत दुनिया में एक बड़ी भूमिका निभाने की चेष्ठा से विश्व में आर्थिक शक्ति बनने की ओर अग्रसर हैं। पश्चिम की बजाए पूर्व की ओर देखने की नीति ने भारत की अंतर्राष्ट्रीय जगत में क्षमता का उभारा हे। यह परिवर्तित सोच और धरातलीय रणनीति से समुद्री आधारित रणनीति पर भारत का ध्यान देना जरूरी है। भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' आसियान को ही ध्यान में रखकर बनाई गई है। भारत–प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा परिदृश्य में आसियान का रणनीतिक महत्व है।

पूर्व को ओर देखो नीति की शुरूआत 1991 में हुई। भारत 1992 में आसियान का संवाद भागीदार बना और 1996 में पूर्ण संवाद भागीदार का दर्जा मिला। आसियान में उपस्थित देशों के साथ भारत के सहयोग का आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा स्त्रातजिक महत्व है। आसियान का बाजार तेजी से बढ़ रहा है और भारत इसका चौथा सबसे बड़ा भागीदार है। इस नई विश्व दृष्टि में भारत की हिन्द महासागर के सामुद्रिक क्षेत्र में उपस्थित द्वीप के हिस्से को निश्चित रूप से अपने प्रभाव एवं पहुँच से न केवल चीन के विस्तार को संतुलित करने में मदद मिलेगी अफ्रीकी महादेश के पूर्वी तट से लेकर प्रशांत महासागर के पश्चिमी तकट तक विस्तारित क्षेत्र में भारत को अपनी उपस्थिति से एशिया को शक्ति के रूप में दर्ज कराना चाहिए। चीन की चुनौती आसियान में आर्थिक स्तर पर सर्वाधिक है क्योंकि चीन को सदैव बाजार की तलाश होती है। यहाँ यह ध्यान देना आवश्यक है कि इस बदलते परिदृश्य में भारत को भी बाजार की आवश्यकता है क्योंकि इस वैश्वीकरण के युग में वस्तुओं का क्रय–विक्रय आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने के लिए आवश्यक है। आसियान देश भारत की इस दृष्टि से सर्वाधिक लाभकारी हो सकते है।

26 जनवरी 2018 के गणतंत्र दिवस पर आसियान के दस देशों के नेताओं को सामूहिक निमंत्रण भेजा जाना एक बहुत बड़े बदलाव की ओर इशारा करता है क्योंकि अब तक केवल एक ही अतिथि को आमंत्रित किया जाता था। आसियान–भारत सम्मेलन का आयोजन नई दिल्ली में हुआ जिसका मुख्य विषय "ASIAN- India Progress and Prosperity." था। इसी अवसर पर आसियान भारत मैत्री रजत जयंती शिखर सम्मेलन–2018 का आयोजन किया गया। विदेश मंत्री सुषमा स्वराज के शब्दों में–''ये समारोह केवल एक कार्यक्रम नहीं है अपितु यह मैत्री सदियों पुरानी है, जो रामायण और बाद्ध धर्म से जुड़ी हुई है। आसियान के 10 में से 8 देश रामायण का मंचन करते है।'' अर्थात् हमारा संबंध आसियान देशों के साथ वर्तमान और प्राचीन काल दोनों से जुड़ा हुआ है। इस शिखर सम्मेलन का उद्देश्य सांस्कृतिक और धार्मिक रिश्तों को मजबूत करना है। दक्षिण चीन सागर में चीन के मजबूत दबाव के बाद

आसियान देश भारत के साथ मजबूत रिश्ता और रणनीतिक संतुलन बनाने की कोशिश में है। आसियान के देश एशिया प्रशान्त क्षेत्र में भारत के और अधिक क्रियाशील होने की उम्मीद में है ताकि चीन के विस्तारवादी रवैये पर लगाम लगे। आसियान देश ना केवल आर्थिक दृष्टि से मजबूत है अपितु निरन्तर तेजी से विकसित हो रहे हैं। भारत आसियान में मौजूद आर्थिक व वाणिज्यिक लाभ उठाना चाहता है। आसियान भारत का चौथा सबसे बड़ा वाणिज्यिक भागीदार है। आसियान के साथ मिलकर भारत भविष्य का ताना बाना बुन रहा है।

12 नवम्बर 2014 को भारत और आसियान ने व्यापार एवं सेवा समझौते पर हस्ताक्षर किया। भारत का कुल व्यापार 660.6 विलियन डालर है जिसमें ये केवल आसियान देशों के साथ व्यापार 71.69 विलियन डालर है। (वाणिज्य मंत्रालय रिपोर्ट 2015–16) इसमें कुछ कमियाँ भी है जिसे सुधार कर भारत इस व्यापार को दोगुना कर सकता है। भारत ओर आसियान देशों के मध्य अवसंरचनात्मक ढाँचे की कमी है। भारत का आसियान में प्रमुख निर्यात मॉस, मूँगफली, कपास, चीनी है, जिसमें पिछले दो वर्षों में 24. 10 की गिरावट मिली है। पेट्रालियम प्रमुख निर्यात की वस्तु है जिसमें भारत की रिफाईनरी का अच्छा ढाँचा सहायता कर सकता है। चीन व जापान आसियान देशों को 90 प्रतिशत स्टील की आपूर्ति करते हैं। इस क्षेत्र में भी भारत को उचित ध्यान देने की आवश्यकता है।

दक्षिण चीन सागर क्षेत्र दुनिया के प्रमुख समुद्री मार्गों में से एक है। इस क्षेत्र का भारतीय अर्थव्यवस्था में अहम योगदान है। हर वर्ष मार्ग से लगभग 5 लाख करोड़ डॉलर का वैश्विक व्यापार होता है। इस रास्ते से होने वाला व्यापार भारत के कुल विदेश व्यापार का 55 प्रतिशत से भी अधिक है। ऐसी स्थिति में अपन जहाजों का सुरक्षित आवागमन भारत की प्रमुख चिन्ताओं में से एक है। इसलिए भारत इस क्षेत्र में मुक्त आवागमन पर विशेष बल दे रहा है। इस क्षेत्र में विश्व का कुल 40 प्रतिशत व्यापार होता है। चीन की इस क्षेत्र में मजबूत पकड़ और पहुँच न केवल भारत के लिए अपितु विश्व क अन्य राष्ट्रों के लिए भी चिंतनीय है। भारत और आसियान की साझा चिन्ताएँ व्यापार के इतर भी हैं। जैसे–चीन की आर्थिक और सैन्य हठधर्मी जिसके कारण चीन अपने क्षेत्रों का निरन्तर विस्तार कर रहा है जिससे अन्य देशों के हित प्रभावित हो रहे हैं। उत्तर कोरिया परमाण् विवाद ने आसियान देशों के साथ–साथ भारत के भी सुख चैन को प्रभावित किया है। दक्षिण चीन सागर विवाद और हिन्द महासागर में जहाजों की सुरक्षा के साथ–साथ अन्य क्षेत्र भी है जिसमें भारत और आसियान को मिलकर कार्य करने की आवश्यकता है।

भारत और आसियान को अपने रिश्तों के सुदृढ़ीकरण की आवश्यकता है जैसे कि मुक्त व्यापार समझौते को बेहतर बनाकर इसे लागू करना चाहिए तथा इसमें आ रही दिक्कतों को जल्द दूर करके क्षेत्रीय व्यापार को बढ़ावा देना जरूरी है। जिससे स्त्रातेजिक, सामरिक, आर्थिक, राजनैतिक सभी क्षेत्रों की सुरक्षा हो सके। दक्षिण चीन सागर में चीन की सुदृढ़ स्थिति तथा भारत और आसियान देशों की स्त्रातजिक स्थिति को देखते हुए इन दोनों देशों को सैन्य सहयोग बढ़ाने पर जोर देना चाहिए जिससे अवैधानिक हथियार के व्यापार, मानव तस्कारी, नशीली पदार्थों की तस्करी आदि पर रोक लगाई जा सके। 1992 में बनी 'लुक ईस्ट नीति' को भारत ने 2014 में 'एकट ईस्ट नीति' में परिवर्तित किया। जिस पर भारत को अत्यधिक जोर देने की आवश्यकता है। जिस पर भारत को अत्यधिक जोर देने की आवश्यकता है जो भारत और आसियान देशों के मध्य सहयोग को बढ़ावा देगा।

आसियान के साथ भारत के सांस्कृतिक, व्यापारिक, सामरिक रिश्ते हैं। अगर हम दक्षिण चीन सागर की बात करें तो दक्षिण कोरिया की जरूरतों का दो तिहाई, जापान की ऊर्जा जरूरतों का 60 फीसदी, आस्ट्रेलिया के निर्यात का 80 फीसदी दक्षिण चीन सागर के मार्ग से गुजरता है, चीन के तेल आयात का बड़ा हिस्सा इसी क्षेत्र से गुजरता है तथा चीन के प्रमुख तेल और गैस भंडार इसी क्षेत्र में है। इसलिए भारत के लिए लाभ की स्थिति यह है वह चीन के खिलाफ अन्य रास्तों के माध्यम से अपनी राजनयिक लड़ाई खुद लड़े और तैयार साझेदारों क साथ नये रणनीतिक गठबंधन बनाए। पूरब की ओर देखें तो भारत के लिए यह आवश्यक है कि सामुद्रिक क्षेत्र में आसियान देश के साथ उसके रिश्ते मजबूत बने रहे। जिसके लिए सामुद्रिक मार्ग और नौपरिवहन के सृदृढ़ीकरण की आवश्यकता है।

आसियान के देश भारत के लिए इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि 21वीं सदी 'एशिया की सदी' मानी जा रही है। और आसियान राष्ट्रों की मजबूत आर्थिक स्थिति के कारण इन्हें 'एशियाई चीता' कहा जाता है। अगर हम एशिया में नए संतुलन की तरफ देखते हैं तो आसियान के साथ भारत का जुड़ाव महतवपूर्ण है। एक तरफ जहाँ भारत को आसियान देशों के रूप में एक अच्छा व्यापारिक साझेदार मिल गया है तो वहीं दूसरी तरफ आसियान देश भारत के रूप में चीन के समझ पश्चिम और पूर्व के मध्य एक संतुलनकर्ता मिल गया है। भारत को ''भारत, जापान, आस्ट्रेलिया और अमेरिका द्वारा नवगठित (क्वैड) QUAD में शामिल होने के साथ–साथ आसियान देशों को यह भरोसा दिलाना होगा कि वह अन्य क्षेत्रीय समूहों की तरफ भी पहले की तरह ही ध्यान देगा। भारत को ध्याान देना होगा कि एक तरफ वह अमेरिका और यूरोप के साथ अच्छे सम्बन्ध रखे तो दूसरी तरफ व्यापक दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र में भी अपना प्रभुत्व बना कर रखे।

भारत दक्षिणी चीन सागर के क्षेत्र में तेल व गैस के क्षेत्र में भारी निवेश कर चुका है और यदि किसी कारण यह मार्ग बंद हो जाता है तो निर्यात और आयात दोनों पर बहुत ही बुरा असर पड़ेगा। सामान भेजने और मँगाने की लागत कई गुना बढ़ जायेगी। आसियान के साथ भारत समुद्री मार्ग के साथ–साथ सड़क परिवहन को भी सुधारने पर निरंतर ध्यान दे रहा है। जुलाई 2016 में UNCLOS के फिलीपिन्स के पक्ष में आए फैसले को चीन ने मानने से साफ इन्कार कर दिया। चीन धीरे–धीरे ज्यादा आक्रामक और विस्तारवादी होता जा रहा है। भारत के हित प्रत्यक्षतः व परोक्षतः दोनों तरह से इस क्षेत्र से जुड़े हुए हैं इसलिए भारत का आसियान देशों के साथ सहयोग अत्यन्त आवश्यक है। चीन की विस्तारवादी नीतियाँ केवल दक्षिणी चीन सागर तक ही सीमित नहीं है। चीन ने समुद्री डाकुओं से निटपने के नाम पर जिबूती, सेसेल्स में नौसैनिक अड्डे बना रहा है। वन वेल्ट वन रोड योजना के जरिए वह व्यापारिक और सामरिक गठजोड़ कर रहा है। म्यांमार और बांग्लादेश में बंदरगाह सुविधाएं हासिल करने की कोशिश कर रहा तथा इन जगहों पर नौसैनिक जहाजां, मिसाइलों और हथियारों की तैनाती कर रहा है।

भारत इस क्षेत्र में व्याप्त चुनौतियों से निपटने हेतु विभिन्न प्रकार के राजनीतिक प्रयास कर रहा है। बहुआयामी राजनीति के अन्तर्गत भारत दक्षिण कोरिया के साथ सामरिक सम्बन्ध मजबूत कर रहा है। दक्षिण कोरिया के साथ रणनीतिक साझेदारी व जापान के साथ असैन्य परमाणु समझौता इसके प्रमाण है। भारतीय नौसेना आसियान क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत करने पर कार्य कर रही है। 2015 में आई0एन0एस0 सहायाद्रि फिलीपीन्स की यात्रा पर गया। भारत की नौसेना विभिन्न आसियान देशों के साथ नौसनिक अभ्यास

करती आ रही है जो समुद्री डकैती, आपदा प्रबन्धन व आपसी सहयोग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से किये जा रहे हैं। इस वर्ष से भारत म्यांमार की थल सेना के साथ भी सैन्य अभ्यास किया।

भारत समुद्री सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए आसियान देशों के साथ आपस में सहयोग व समन्वय पर कार्य कर रहा है। वहीं चीन के खतरे के ध्यान में रखते हुए भारत अपनी नौसेना की क्षमता को भी गुणात्मक व मात्रात्मक रूप से सुदृढ़ कर रहा है। चीन के प्रतिद्वन्दी वियतनाम के साथ 2016 में राजनीतिक साझेदारी को 'व्यापक राजनीतिक भागीदारी' समझौते में परिवर्तित किया गया है। वियतनाम को भारत विभिन्न प्रकार की सैन्य सहायता भी उपलब्ध करा रहा है। भारत वियतनाम को ब्रम्होस मिसाइल की तकनीक उपलब्ध करा रहा है। आसियान देश भारत की 'मेक इन इण्डिया' नीति के अन्तर्गत अपने रक्षा उत्पादों के बाजार भी हैं। जिससे भारत अपने रक्षा खर्चों को बिना सुरक्षा चुनौतियों से समझौता किए कम कर सकता है।

आसियान के देश भारत को वर्तमान में एशिया प्रशांत क्षेत्र में 'सुरक्षा प्रदाता' के रूप कें देख रहे हैं। यहाँ पर भारत को सन्तुलनकारी रणनीति अपनानी की आवश्यकता है। एक तरफ चीन के साथ रिश्तों को बनाये रखना है तो दूसरी तरफ आसियान देशों की उम्मीदों को कायम भी रखना है। भारत आसियान में अपनी पहुँच को बढ़ाकर चीन की 'वन बेल्ट वन रोड' योजना को सन्तुलित कर सकता है।

12वें आसियान सम्मेलन (14 नवम्बर 2017) में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने स्वतंत्र समुद्री आवागमन पर जोर देने की बात की। इसके अलावा अन्य देशों की सम्प्रभुता के सम्मान करने पर बल दिया। उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से चीन पर निशाना साधा। आसियान राष्ट्रों को अधिक करीब लाने के उद्देश्य से '26 जनवरी 2017' के भारत आसियान शिखर सम्मेलन, नई दिल्ली में 'शेयर्ड वैल्यूज कॉमन डेस्टिनी' का आयोजन हुआ। जिसके अन्तर्गत आपसी सम्बन्धों की 25वीं वर्षगांठ मनायी गयी। इस सम्मेलन में कई बातों पर सहमति बनी जो निम्नलिखित है :–

1. आसियान के 10 देशों में से प्रत्येक के किसी एक नागरिक को पद्म अंलकरण से सम्मानित करना।
2. 2019 को भारत– आसियान पर्यटन वर्ष के रूप में मनाने का प्रस्ताव।
3. भारत द्वारा आसियान देशों के 1000 शोध फेलोशिप प्रदान करने की घोषणा।
4. 'दिल्ली घोषणापत्र' में आतंकवाद पर मिलकर कार्य करने की सहमति।
5. भारत– आसियान समुद्री क्षेत्र में 1982 के सामुद्रिक कानून लागू करने पर बल दिया जाय।
6. भारत ने 'आसियान कनेक्टिविटी–2025' तथा आसियान आई0सी0सी0 मास्टर प्लान' के लिए एक अरब डॉलर के ऋण की घोषणा।
7. भारत व कम्बोडिया के मध्य सांस्कृतिक क्षेत्र में सहयोग और मानव तस्करी को रोकने के लिए चार महत्वपूर्ण समझौतों पर हस्ताक्षर किये गये।

उपर्युक्त समझौते को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि भारत की 'एक्ट ईस्ट नीति' आसियान देशों के साथ सम्बन्धों को प्रगाढ़ करने में सकरात्मक भूमिका निभा रही है। यह भविष्य में दक्षिण पूर्व एशिया व हिन्दमहासागर के देशों में भारतीय विदेश नीति की सफलता का साधन सिद्ध होगी।

सन्दर्भ

1. www.vifindia.org/article/2017 august/08/asean-s- centrality- and the South-China- sea- dispute.
2. 'India,Vietnam agree to scale up defence cooperation' PTI May 26, 2015
3. http :// mea, gov. in/asean india/speeches- statements.
4. Economic survey 2016-17 vol. II, Government of India.
5. 'PM Modi in Manila' The Hindu 15 November, 2017
6. Mukul G. Asho, 'ASSAN at 40 : Future Uncertain in global Virtas, vol.6, July- December 2007
7. http :/ www, asean affairs. com/india-5-engagement with - asean.
8. G.V.C. Naidu, 'India and the Asia- Pacific : The look Eart Policy' Indina Foreign Affairs Journal, vol.1, no.1, January-March 2006
9. Sen, Gautam, "Fall out of the Rohingya Issue on Bangladesh's Domestic Politics" , IDSA, October 3, 2017.
10. Chauhan, Neeraj, "Rohingya exodus form Myanmar", The Times of India, September 25, 2017.
11. Ministry of Annual Report, 2016-17.
12. "Look East policy turmed into Act East", The Hindu, November 14, 2014.
13. पत्र सूचना कार्यालय, नई दिल्ली, 12 जनवरी, 2018
14. बी.बी.सी. हिन्दी, म्यांमार में भारत के समक्ष चुनौती
15. राज्यसभा टी.वी., विशेष कार्यक्रम, 14 नवम्बर, 2017
16. मजूमदार, राहुल, ''आसियान रणनीति'' में अब 'निवेश' पर फोकस करे भारत, ओ.आर.एफ. फाउण्डेशन, नई दिल्ली, 6 मार्च, 2017
17. ''पुराने ख्वाबों की नई ताबीर'' हिन्दुस्तान, 26 जनवरी, 2018